ISSN:2583-8849



मदन जोशी 'सार्थक'
उदयपुर, राजस्थान

आस्तीन के साँप

हम भारत के भाग्य-विधाता,
संस्कृति-सभ्यता के पुरोधा,
रिश्ते-नातों के पवित्र बंधन,
परंपरा-मित्रता को निभाते।
कथनी-करनी में अंतर न करते,
रिश्वत में विश्वास न करते,
एक-दूजे का साथ निभाते,
रामायण के राम बनते,
महाभारत के कृष्ण बनते,
राष्ट्र-प्राण प्रेरणा के द्योतक बनते,
जन-गण-मन, वंदे मातरम्,
जय हिंद के उद्घोषक बनते।
भारत-भू को स्वर्णिम-सुंदर,
विश्वगुरु बनाने के सपने बुनते।
वेद, पुराण, रामायण, महाभारत,
संहिता जैसे ग्रंथों को पढ़ते।
गायत्री मंत्र के उच्चारण से
दिन का शुभारंभ करते।
वीर भगत सिंह, शिवाजी,
महाराणा के शौर्य को पढ़ते।
रानी लक्ष्मीबाई, पन्नाधाय,
पद्मिनी, हाड़ी रानी की
बलिदानी गाथा को सुनते।
महावीर, गौतम बुद्ध, गुरु गोविंद,
नानक—सबका ध्यान लगाते।
हम राम-सी मर्यादा में रहकर
बहन-बेटियों का सम्मान करते।
हम क्षमाशील, संयम धारण कर
अहिंसा को अपना धर्म मानते।
हम सरस्वती, काली, दुर्गा,
चामुंडा की पूजा करते।
हम शत्रुओं के नर-मुंड
गले लटका रण में युद्ध करते।
भारत माँ की रक्षा में हम
अपने प्राणों को सदैव तजते।
निज स्वार्थ-पूर्ति, लोभ-लालच में
हम आस्तीन के साँप न बनते।
हम भारत माँ के बेटे हैं,
भारत माँ के चरणों में
शीश अपना झुकाते हैं।
कसम खाकर भारत माँ की,
अब ऐलान हमें करना होगा।
पल रहे आस्तीन के साँपों के
फन को पैरों से अब कुचलना होगा।
विश्वासघाती, गद्दार, मक्कारों को
अब धरा से मिटाना होगा।
भारत माँ की छवि करें धूमिल,
सभ्यता-संस्कृति पर करें प्रहार—
ऐसे बॉलीवुड से भी दूर रहना होगा।
बहन-बेटियों की अस्मिता की
अब लाज रखनी है अगर तो,
आस्तीन के साँपों के फन को
पैरों से अब कुचलना होगा।